वार्तालाप नंबर 536, कलकत्ता, ताः16.3.08
Disc.CD No.536, dated 16.3.08 at Calcutta

जिज्ञासु :– बाबा, 68–69 की वाणी का टीचर के रूप में क्लारिफिकेशन चल रहा है, जब ये सब वाणियाँ खत्म हो जाएँगी, तो डाइरैक्ट वाणी चलेगी क्या?
बाबा – तुम डाइरैक्ट वाणी सुनते हो या इनडाइरैक्ट सुनते हो? (सभी ने कहा – डाइरैक्ट) पोलपट्टी खुल गयी। अभी तुम कौन–सी वाणी सुनते हो? (जिज्ञासु – डाइरैक्ट सुन रहे हैं) क्लारिफिकेशन देने वाला डाइरैक्ट होता है या इनडाइरैक्ट होता है?
जिज्ञासु – डाइरैक्ट होता है।
बाबा– फिर क्या पूछ रहे हो?
Student: Baba, the clarification of the Vanis dated 1968-69 is being given (by Shivbaba) in the form of a teacher. Will direct Vanis be narrated after all these Vanis are exhausted?
Baba: Do you listen to Vanis directly or do you listen indirectly? (Everyone said, directly) Your secret is out. Which Vani do you listen to now? (Student said, we are listening directly) Is the one who gives clarifications direct or indirect?
Student: He is direct.
Baba: Then what are you asking?

समय – 0.05
जिज्ञासु – रिझाने माना? मुरली में रिझाने शब्द आया।
बाबा – रिझाने माने मनवाने के लिए। रिझाना, जैसे किसी की मक्खनबाजी की जाती है , ऐसे एक शब्द है रिझाना। किसी से कोई बात मनवाने के लिए आरजू करना, हुज्जत करना।
Time: 0.05
Student: What does (the Hindi word) '*rijhaaney*' mean? The word '*rijhaaney*' has been mentioned in the Murli.
Baba: '*Rijhaaney*' means 'to persuade'. '*Rijhana'* means, for example someone is buttered. Similarly there is the word '*rijhana*'. (It means -) To request, to plead someone in order to persuade about something.

समय –1.30
जिज्ञासु – टी.वी. में बैठके देखते हैं तो उसको डाइरैक्ट कहेंगे?
बाबा – टी.वी. में बैठके देखते हैं!
जिज्ञासु – हाँ।
बाबा – तो डाइरैक्ट कैसे? डाइरैक्ट में तो वाइब्रेशन भी मिलता है, डाइरैक्ट दृष्टि भी मिलती है, डाइरैक्ट हाव–भाव भी मिलते हैं। टी.वी. में ये सब कहाँ मिलते हैं।
Time: 1.30
Student: Will it be called direct (meeting with Shivbaba) when we sit and watch (Baba) on TV?
Baba: Do you sit and see on TV?
Student: Yes.
Baba: So, how is it 'direct'? In case of 'direct' (meeting) you receive the vibrations, you receive the direct *drishti* and you see the direct expressions (*haav-bhaav*) as well. Do we get all these on the TV?

समय – 1.55
जिज्ञासु – बाबा, आज की मुरली में कहा है – भक्तिमार्ग में जो जूता खोलते हैं, वो किसका यादगार है? जूता खोलके देवालय में जाते हैं। तो ज्ञानमार्ग में कैसे होता है?

Time: 1.55
Student: Baba, it has been said in today's Murli, In the path of worship they remove the shoes; what is it a memorial of? People remove their shoes and enter the temple. So, how does it take place in the path of knowledge?

बाबा– प्रदर्शनी वगैरह में जूते उतारने की क्या दरकार? वहाँ मंदिर में ये समझ करके जाते हैं – ये मूर्ति भगवान बैठी है। मूर्ति में भगवान को समझते हैं लेकिन यहाँ तो ज्ञानमार्ग है ना। जो मूर्तियाँ म्यूजियम में रखी हुई हैं, हम समझते हैं – ये ज़ड मूर्तियाँ हैं या इनमें भगवान प्रवेश है? ज़ड मूर्तियाँ हैं। वहाँ की बात अलग। वहाँ म्यूजियम में, प्रदर्शनी में जूते आदि उतारने की बात नहीं होनी चाहिए। और यहाँ? यहाँ क्यों जूते उतारके आते हैं? यहाँ भी तो ज्ञानमार्ग है। क्योंकि यहाँ कोई जड़ मूर्ति नहीं है। बुद्धि में बैठा हुआ है कि जड़ मूर्ति में बाप नहीं आता है। जानवरों में भी बाप नहीं आता है। कंकड़–पत्थर में भी नहीं आता है। बाप तो मनुष्य तन में आता है।
Baba: Where is the need to leave the shoes (outside) at exhibitions, etc.? There, people go to the temples thinking that God is sitting in the form of this idol. They think that God resides in the idol, but here it is a path of knowledge, isn't it? The idols that have been placed in the museum; we feel that they are non-living idols or has God entered them? They are inert idols. The matter of that place is different. There, in the museum, exhibition, there should not be any need to remove the shoes, etc. And here? Why do people come here having removed their shoes? Even here it is a path of knowledge. Because here it is not an inert idol. It has fitted into the intellect that the Father does not enter an inert idol. The Father does not enter even in the animals. He does not even come in gravel and stones (*kankar-paththar*). The Father indeed comes in a human body.

समय – 3.25
जिज्ञासु – बाबा, कृष्ण के 84 जन्म के अंत में उनकी जो बहन थी, वो राधा बच्ची थी या गीता माता थी? लेकिन बाबा एक वार्तालाप में आया है कि कृष्ण के अंतिम 84 वें जन्म में उनकी सगी बहन है – राधा बच्ची।
बाबा – वो संगमयुगी राधा है या सतयुग की राधा है?
जिज्ञासु – वो तो संगमयुगी राधा है।
बाबा – बस।
जिज्ञासु – लेकिन जो सगी बहन बोला है ना 84 जन्मों के अंत में, वो कृष्ण वाली आत्मा है ना।
बाबा – कृष्ण वाली आत्मा है! राधा? कृष्ण वाली आत्मा राधा है? कहाँ बुद्धि पटाका खा रही है?
Time: 3.25
Student: Baba, at the end of the 84 births of Krishna, was his sister Radha *bachchi* or Gita *mata*? But Baba, it has been mentioned in a discussion (CD) that at last, i.e. 84th birth of Krishna, his real sister was Radha *bachchi*.
Baba: Is she the Confluence-aged Radha or the Golden-aged Radha?
Student: She is the Confluence-aged Radha.
Baba: That is all.
Student: But the own sister at the end of 84 births, about whom it has been mentioned, is the soul of Krishna, isn't it?
Baba: Is she the soul of Krishna? Radha? Is Radha the soul of Krishna? Where is your intellect wandering?

जिज्ञासु – बाबा, सुभद्रा किसका पार्ट है?
बाबा– सुभद्रा का पार्ट अलग, द्रौपदी का पार्ट अलग, राधा का पार्ट अलग। सबको मिलाके इकट्ठा थोड़े ही किया जा सकता है। सुभद्रा का तो हरण किया गया था। राधा का हरण थोड़े ही किया गया था। द्रौपदी का कोई हरण थोड़े ही किया गया।
जिज्ञासु – द्रौपदी जो होगी, उसका पार्ट सुभद्रा का होगा।
बाबा – धत्! जो ध्रुवपदी है, वो तो ध्रुव पद पाने वाली है। दुनियाँ कहे – ये नहीं हो सकती है।
जिज्ञासु – हाँ, वो तो गीता माता है।
बाबा– हाँ जी।
Student: Baba, who plays the part of Subhadra?
Baba: Subhadra's part is different, Draupadi's part is different, Radha's part is different. Everyone cannot be clubbed together. Subhadra was abducted. Radha was not abducted. Draupadi was not abducted.
Student: Draupadi will play the part of Subhadra.
Baba: What are you saying?! Dhruvpadi is going to achieve a post that is fixed like a Pole Star (*Dhruv*). The world may say that this cannot be possible.
Student: Yes, she is Gita mata.
Baba: Yes.

जिज्ञासु– तो सुभद्रा कौन है?
बाबा– सुभद्रा तो, सु माने सुन्दर, भद्र माना कल्याणकारी, हर हालत में कल्याणकारी ।
जिज्ञासु – हाँ, वो तो वेदांती माता।
बाबा– अरे! वो राधा का पार्ट है या सुभद्रा का पार्ट है? उसका हरण किया गया क्या?
जिज्ञासु – वो कौन है बाबा?
बाबा – सुभद्रा जो है, वो तो भद्र ही भद्र है। उसमें अकल्याण का नाम–निशान हो ही नहीं सकता। रुद्र माला का मणका भी है।
जिज्ञासु – किसका पार्ट?
बाबा – किसका पार्ट! अष्टदेवों का ही पार्ट है। अब यहाँ क्या बाबा कोई पार्ट खोल करके बताते हैं क्या? जो जिसका पार्ट होगा, वो स्वतः ही अपने मुँह से अपना बखान करेगा, अपना कार्य करके दिखायेगा।
Student: So, who is Subhadra?
Baba: Subhadra, '*su*' means '*sundar*' (beautiful), '*bhadra*' means beneficial; (the one who is) beneficial under any circumstance.
Student: Yes, she is mother Vedanti.
Baba: Arey! Is that the part of Radha or Subhadra? Was she abducted?
Student: Who is she Baba?
Baba: Subhadra is just *bhadra* (benevolent). There cannot be any name or trace of harm in her. She is also a bead of the rosary of Rudra.
Student: Whose part?
Baba: Whose part is it! It is the part of the eight deities only. Well, does Baba reveal anybody's part openly here? Whoever is to play whatever role, he will reveal it with his own mouth, he will perform his task and show.

जिज्ञासु – सुभद्रा का पार्ट क्लीयर नहीं हुआ।
बाबा – क्लीयर तो तब होगा, जब अपना पार्ट स्टेज पर बजावेंगे।
जिज्ञासु – सुभद्रा का पार्ट जगदम्बा को बोला है।

बाबा– हाँ, तो जगदम्बा भी अपना पार्ट जब स्टेज पर बजावेगी तब ही तो क्लीयर होगी कि जगदम्बा है। महाकाली अपना पार्ट स्टेज पर बजावेगी तब ही तो क्लीयर होगी। सिर्फ हमारे तुम्हारे कहने से कोई मान लेगा क्या?
Student: The part of Subhadra has not become clear (to me).
Baba: It will become clear when they play their part on the stage.
Student: Jagdamba is said to play the part of Subhadra.
Baba: Yes, so, it will become clear that Jagdamba is Jagdamba only when she plays her part on the stage. Mahakali's part will become clear only when she plays her part on the stage. Will anyone accept if I or you say it?

जिज्ञासु – लेकिन बाबा सुभद्रा और द्रौपदी, दो आत्माएँ अलग–अलग हैं या एक ही है?
बाबा – अरे! द्रौपदी का स्वंयवर हुआ। क्या? सारी पब्लिक के बीच में द्रौपदी स्वयंवर हुआ, लेकिन सुभद्रा का हरण हुआ। स्वयंवर नहीं हुआ। जैसे रूक्मिणी हरण हुआ। ये पटरानियाँ हैं।
Student: But Baba, are Subhadra and Draupadi two different souls or one and the same?
Baba: Arey! Draupadi got married through *swayamvar* (a practice where a Princess chooses her husband from among many Princes) What? Draupadi was married through *swayamvar* in the midst of the entire public, but Subhadra was abducted. She was not married through *swayamvar*, just as Rukmini (Krishna's wife) was (also) abducted. They are queens.

समय – 7.33
जिज्ञासु – बाबा, 1942 से 46 तक इस बीच में जो यज्ञ चला, दो माताओं ने चलाया ऐसा सुना है। तो उस समय राधा बच्ची भी थी, गीता माता भी थी, तो उस समय ज्ञान कैसे? 46 में तो राधा बच्ची ने शरीर छोड़ा ऐसे सुना। तो उस बीच में यज्ञ कैसे चला? ओममण्डली 42 के बाद, झगड़े के बाद खत्म हो जाती है। 47 से तो ब्रह्मा बाबा(दादा लेखराज) चलाते हैं लेकिन 42 से 46 तक यज्ञ कैसे चलता है?
Time: 7.33
Student: Baba I have heard that between 1942 and 46 the yagya was run by the two mothers. So, at that time, Radha bachchi also existed, Gita mata also existed; So, how was knowledge narrated at that time? I have heard that Radha bachchi left her body in 1946. So, how did the yagya function at that time? Om Mandali did not exist after 1942, i.e. after the dispute. Brahma Baba (Dada Lekhraj) controlled the yagya from 1947, but how did the yagya function from 42 to 46?

बाबा – नाम तो "ओम मन्डली" ही रहता है। जो भी संगठन थोड़ा बहुत बचा हुआ है, नाम तो वही पुराना चलेगा ना। जब नया संगठन तैयार हो जाता है, नया स्थान तैयार हो जाता है, तो नाम बदल जाता है। ब्रह्मा से ब्रह्माकुमारी विद्यालय नाम पड़ जाता है।
जिज्ञासु – यज्ञ कैसे चलता है बाबा? मुरली तो नहीं चलती है। कोई तो.....
बाबा – मुरली तो चलाने वाला शिवबाबा है ना। शिवबाबा पहले मुरली नहीं चलाते थे। 10–15 पेज़ लिखवाते थे। बाप लिखवाते थे और बच्चे लिखते थे।
Baba: The name remains as 'Om Mandali' itself. Whatever little gathering survived, will continue to have the old name, won't it? When the new gathering becomes ready, when the new place becomes ready, then the name changes. It gets the name Brahmakumari Vidyalay based on (the name) Brahma.
Student: Baba, how did the yagya function? The Murli was not narrated. Someone must....
Baba: The one who narrates Murlis is Shivbaba, isn't it? Initially Shivbaba did not narrate Murlis. He used to dictate 10-15 pages. The Father used to dictate and the children used to write.

समय – 9.10
जिज्ञासु – बाबा, ज्ञान और भक्ति साथ–साथ है या अलग–अलग है?
बाबा – अगर साथ ही साथ है, तो ज्ञान की प्रारब्ध किसे कहेंगे? जहाँ ज्ञान है, वहाँ भक्ति नहीं। जहाँ भक्ति है, वहाँ ज्ञान नहीं।
Time: 9.10
Student: Baba, is *gyan* and *bhakti* simultaneous or separate?
Baba: If they are simultaneous, then what would be called the fruit of knowledge? Where there is knowledge, there is no *bhakti*. Where there is *bhakti* there is no knowledge.

जिज्ञासु – जैसे बाबा महाभारत में दिखाया गया था कि हंस के दो पंख हैं। एक ज्ञान, दूसरा भक्ति। एक पंख काट दिया जाए तो हंस उड़ नहीं सकता। अलग–अलग हैं।
बाबा – तुम भक्ति वाली बातें करते हो। भक्तिमार्ग में तीन कहते हैं – ज्ञान, भक्ति और वैराग्य, लेकिन बाबा का कहना है जब ज्ञान मिलता है तो भक्ति उड़ जाती है। जिसके अंदर ज्ञान बैठ जायेगा तो भक्ति के कर्मकाण्ड छूट जावेंगे। अगर भक्ति भी चलाता रहे और ज्ञान में भी चलता रहे इससे साबित होता है ज्ञान उत्पन्न हुआ ही नहीं।
Student: For example Baba it was shown in the Mahabharata that there are two wings of swan. One is knowledge and the other is *bhakti*. If one of the wings is cut, the swan cannot fly. They are different.
Baba: You are talking about *bhakti*. In the path of worship three things are mentioned, knowledge, *bhakti* and detachment (*vairagya*), but Baba says, when someone receives knowledge, then *bhakti* vanishes. The person in whom knowledge fits will leave the rituals of *bhakti*. If he continues to practice *bhakti* and continues to follow the path of knowledge as well, then it proves that knowledge has not emerged (in him) at all.

समय– 10.25
जिज्ञासु – बाबा, बाप के रूप में पार्ट बजाते हैं, टीचर के रूप में पार्ट बजाते हैं, सद्गुरु के रूप में पार्ट बजाते हैं, हमने बोला – बाप, टीचर का जो पार्ट है, ब्रह्मा के मुख के द्वारा जो मुरली चली, उसका क्लारिफिकेशन देना और अव्यक्त वाणी अभी जो गुलजार दादी के मुख से चल रही उसका भी क्लारिफिकेशन देना, ये टीचर का पार्ट है। इसके बाद क्या बाबा का सद्गुरु का पार्ट शुरू हो जायेगा?
Time: 10.25
Student: Baba plays a part in the form of a Father, He plays a part in the form of a teacher, He plays a part in the form of Sadguru; I said, the part of the Father and the Teacher is to give clarification of the Murlis which were narrated through the mouth of Brahma and to give clarification of the Avyakta Vanis which are now being narrated through the mouth of Gulzar Dadi. Will Baba start playing the part of Sadguru after this?

बाबा – एक ही रथ है, जो बाप के रूप में वर्सा देने वाला भी है, बाप के रूप में आत्मा को अपना परिचय मिलता है – मैं आत्मा कौन–से कुल की हूँ, कौन–से धर्म विशेष में, कौन–से धर्मखण्ड विशेष में पार्ट बजाने वाली आत्मा हूँ – ये आत्मा को अपने बाप से वर्सा मिलता है, अनुभूति होती है। तो बाप, बाप भी है और फिर टीचर भी है। और टीचर होने के बाद, समझाने के बाद, फिर सद्गुरु भी है। गति और सद्गति देने वाला एक ही गुरु है। और कोई से गति, सद्गति का वर्सा नहीं मिलता।
Baba: There is only one chariot, which also gives inheritance in the form of a Father. A soul obtains its introduction through the form of the Father. I, the soul, belong to which clan? In which particular religion and which particular religious land do I soul play the part? A soul obtains this inheritance, experience from its Father. So, the Father is a Father too; and then He is

a teacher as well. And after being a Teacher, after explaining (the knowledge) He is a Sadguru as well. There is only one Guru who gives *gati* (salvation) and *sadgati* (true salvation). You do not obtain the inheritance of *gati, sadgati* from anyone else.

समय – 12.04
जिज्ञासु – स्वरूपनिष्ठ इसका गुह्यार्थ क्या है ?
बाबा – स्व, रूप। स्व माने आत्मा, रूप माने रूप। आत्मा का रूप ज्योति बिन्दु। निष्ठ माने बैठने वाला। ज्योति बिन्दु स्वरूप के स्थिति में स्थित होकर के जो बैठ जाए, सो ही स्वरूपनिष्ठ।
जिज्ञासु – जब साढ़े चार लाख आत्मा पूरा आत्मिक स्थिति में चले जायेंगे, स्व स्थिति में चले जाएँगे तो नंबरवार सब स्वरूपनिष्ठ में चले जायेंगे? नंबरवार साढ़े चार लाख स्वरूपनिष्ठ हो जाएँगे?
Time: 12.04
Student: What is the deep meaning behind the word '*swaroopnishth*'?
Baba: *Swa, roop*. *Swa* means the soul, '*roop*' means form. The form of a soul is point of light. *Nishth* means the one who sits. The one who sits by becoming constant in the stage of point of light form is *swaroopnishth*.
Student: When all the four and a half lakh souls would achieve the complete soul conscious stage, when they achieve the self stage (*swasthiti*), then will they become numberwise *swarupnishth*? Will the four and a half lakh (souls) become numberwise *swarupnishth*?

बाबा – स्वरूपनिष्ठ होंगे तभी तो दुनियाँ का परिवर्तन होगा। अगर साढ़े चार लाख ही स्वरूपनिष्ठ नहीं हुए तो दुनियाँ का परिवर्तन कैसे होगा? विनाश भी नहीं होने वाला है।
जिज्ञासु – बाबा को जो याद करते हैं, उस समय आत्मिक स्थिति पूरी हो जायेगी, तो बाप की याद पूरी मर्ज हो जाएगी? माने आत्मिक स्थिति एक साथ में बाबा और आत्मा .....
बाबा– ज्योति बिन्दु आत्मिक स्वरूप से परमात्मा बाप अलग है ही नहीं। जहाँ ज्योति बिन्दु आत्मा है, परमपिता परमात्मा बाप उस बच्चे के साथ ही साथ है। इसलिए कहा भी जाता है – परमपिता और साथ में परमात्मा।
Baba: The world will be transformed only when we become *swarupnishth*. If the four and a half lakh souls themselves do not become *swarupnishth*, then how will the world transform? Even the destruction would not take place.
Student: When those who remember Baba achieve complete soul conscious stage, then will the remembrance of Baba merge completely? I mean to say will the soul conscious stage and Baba's remembrance be simultaneous?....
Baba: The Supreme Soul Father is not separate from the point of light soul form at all. Where there is point of light soul, the Supreme Father Supreme Soul Father is definitely with that child. That is why it is also said, the Supreme Father; and with Him the Supreme Soul.

जिज्ञासु – बाबा, सद्गुरु का पार्ट जब शुरू होगा तब तो वाणी चलाने की ज़रूरत नहीं है?
बाबा – सत् माने क्या?
जिज्ञासु – सच्चाई।
बाबा – सच्चाई कोई वाणी चलाना नहीं है। सच्चाई के सामने कोई टिक नहीं सकता। ऐसे ही सद्गुरु का वो पार्ट है जिसके सामने वाचा से कोई टिक नहीं सकेगा।
Student: Baba, when the part of the Satguru begins, then will there not be any need to narrate vani?
Baba: What does *Sat* mean?
Student: The truth.
Baba: Truth does not mean mere speech. Nobody can face truth at all. Similarly, Satguru's part is such that nobody will be able to face him with words.

समय – 14.20
जिज्ञासु – बाबा परमपिता परमात्मा दो चीज़ हैं।
बाबा– परमपिता माना जिसका कोई पिता नहीं और परमात्मा का तो पिता है।
Time: 14.20
Student: Baba, Supreme Father and Supreme Soul are two different things.
Baba: Supreme Father means the one who does not have any father whereas the Supreme soul has a father.

समय – 14.38
जिज्ञासु – बाबा, शिव तो पत्थरबुद्धि को पारस बनाते हैं। अभी पारस से हीरे बन जाते हैं। हीरा तो जहर भी होता है।
बाबा – तो?
जिज्ञासु – हीरे तो ज्ञान का चमक मारते हैं। तो जहर कैसे बन जाता है?
बाबा – जहर बन जाता है कि होता ही है?
जिज्ञासु – होता ही है। मुँह में डालने से मर जाते हैं। तो मरने की बात क्या है?
बाबा – हीरा जो है, वो याद करने की चीज़ है। चाट जाने का चीज नहीं है। वो रोशनी देने वाली चीज़ है, रोशनी देने वाला बल्ब है और उसको कहे मैं अभी खा जाऊँ इसे।
Time: 14.38
Student: Baba, Shiv transforms those with a stone-like intellect into *paaras*. Now we are transformed from *paaras* to diamonds. The diamond is also poisonous.
Baba: So what?
Student: The diamonds radiate the light of knowledge. So, how does it become a poison?
Baba: Does it become a poison or is it a poison already?
Student: It is already a poison. People die if they put it into their mouth. So, what is the reason of death (in the unlimited sense)?
Baba: The diamond is a thing to be remembered. It is not a thing to be licked. It is a thing that radiates light; it is a bulb that radiates light and if someone says that I will eat it now!

जिज्ञासु – चाट जाने की बात मतलब जैसे कोई आत्मा ज्ञान का चमक मार रहा है और उसमें कोई लिपट जाए, मतलब वो खत्म हो जायेगा?
बाबा – पतंगा का क्या होता है? पतंगा शमा के ऊपर आता है, फिर उसका क्या रिज़ल्ट होता है? खत्म हो जाता है।
जिज्ञासु – जिस तरह परमपिता परमात्मा में आते हैं, तो उसमें लपट जाने के कारण ये भी हो सकता है कि पद नीचा हो सकता है।
बाबा– हँ?
Student: Licking means that suppose a soul is radiating light of knowledge and if someone entangles in him, then will he perish?
Baba: What happens to a moth (*patanga*)? A moth comes near lamp (*shama*); then what isthe result? It perishes.
Student: Just as the Supreme Father comes in (the body of) the Supreme Soul, and because of entangling in him, it is possible that his post becomes degraded.
Baba: Hm?

जिज्ञासु– जैसे बाबा ने मुरली में बोला है कि अगर सुप्रीम सोल परमपिता की याद न आये तो भले शरीरभान को ही याद करो, फिर भी बेड़ा पार हो जायेगा।
बाबा – शरीरभान को याद करो !
जिज्ञासु – मतलब इस सृष्टि में एक ही जो शिवलिंग है, जिसमें शिव प्रवेश होता है, जैसे शिविलिंग में पत्थर के ऊपर पानी डाला जाता है। मतलब कोई आत्मा जो फर्स्ट में एवर प्योर रहती है और लास्ट में.....
Student: For example, Baba has said in the Murli that if one is not able to remember the Supreme Soul Supreme Father, then one may remember the body consciousness, even then the ship would sail across (i.e. achieve true salvation).
Baba: Should we remember the body consciousness?
Student: I mean to say the only Shivling which exists in this world, in which Shiv enters, for example water is poured over the stone of Shivling. It means a soul which is initially ever pure and in the last....

बाबा – इनका कहने का मतलब ये है कि जिस तन में मुकर्रर रूप से परमात्मा परमपिता शिव आते हैं वो रथ, उसको भी अगर हम याद करें, तो वो रथ भी अविनाशी है। वो अंत तक विनाश को पाने वाला नहीं है। तो अविनाशी को याद करेंगे तो क्या बनेंगे? अविनाशी ही बनेंगे। इसलिए भक्तिमार्ग में भगवान के चरणों की मिट्टी भी माथे से लगाते हैं। चरण माने बुद्धि रूपी पाँव। और वो बुद्धि रूपी पाँव तो है ही परमपिता। वो बुद्धि रूपी पाँव से जिस रथ में प्रवेश करता है वो एक मिट्टी की तरह है। उस परमपिता के बुद्धि रूपी पाँव की वो मिट्टी है। वो मिट्टी भी अगर मस्तक से लग जाए, चिपक जाए, याद रहे, तो भी कल्याण है।
Baba: He means to say that even if we remember the body, the chariot in which the Supreme Soul, Supreme Father Shiv comes in permanent form, then that chariot is also imperishable. It is not going to be destroyed till the end. So, if we remember the imperishable, then what will we become? We will also become imperishable. That is why in the path of worship, soil at the feet (*charan*) of God is applied on the forehead (by the devotees). *Charan* means intellect-like feet. And that intellect-like feet is the Supreme Father. The chariot in which He enters with His intellect-like feet is like soil. He is the soil of the intellect-like feet of that Supreme Father. Even if that soil is applied, if it sticks to the forehead, if it remains in our thoughts, it is beneficial.

जिज्ञासु – बाबा, शिवलिंग में दुनियाँवी गुरु लोग स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दो दिखाते हैं, हम लोग तो अच्छी तरह जानते हैं कि रामवाली आत्मा या शंकर की आत्मा शिवलिंग है।
बाबा – शिवलिंग में स्त्रीलिंग, पुल्लिंग कहाँ है? शिव तो पुरुष ही पुरुष है। शिव के दो पार्ट कहे जा सकते हैं। जबकि शिवलिंग में वो ब्रह्मा की सोल भी प्रवेश करती है, तो कहा जाता है बापदादा या कहा जाता है – "अर्धनारीश्वर"। आधा पुरुष का पार्ट, आधा स्त्री का पार्ट। जैसे वर्तमान समय एडवान्स पार्टी में कहेंगे – प्रैक्टीकल में माँ–बाप का पार्ट नहीं है। फिर भी माँ की पालना मिल रही है। बिना माता की पालना के परिवार पनप नहीं सकता।
Student: Baba, the worldly gurus show the female and male organs in the Shivling. We people know very well that the sul of Ram or Shankar is the Shivling.
Baba: Where is the female and male organ in the Shivling? Shiv is just male. It can be said that Shiv has two parts (i.e. roles). When Brahma's soul also enters the Shivling, then it is said Bapdada or '*Ardhanaareeshwar*'. Half masculine role and half feminine role. Just as it would be said in the advance party at present, the part of Mother and Father is not being played in practical. Even so the sustenance of the Mother is being received. Without the sustenance of the Mother, the family cannot prosper.

दूसरे जिज्ञासु ने कहा – बाबा, वो जानते हैं कि – स्त्रीलिंग माना जलाधारी को बोलते हैं।
बाबा – वो लिंग थोड़े ही है।
पहला जिज्ञासु – हम जलाधारी को नहीं कह रहे हैं। हम कह रहे हैं – जैसे आदि में जब एक चना में दो दाने थे। तो बीच में जब सुप्रीम सोल आते हैं, बाबा ने ठीक ही बोला अभी।
Another student said: Baba, they know that the *jalaadhaari* (the circular base of the Shivling) is called the female organ.
Baba: It is not the *ling*.
The first student said: I am not talking about the *jalaadhaari*. I am telling that just as there were two halves in one pulse in the beginning. So, when the Supreme Soul comes in the middle, whatever Baba said just now is correct.

समय – 19.25
जिज्ञासु – बाबा, सुभद्रा का हरण किया था। उसका बेहद का मतलब क्या है? उसका कौन हरण किया?
बाबा– हरण तो अर्जुन ने किया। अर्जुन तो कोई दूसरा थोड़े ही है। जो नर से नारायण बनने वाला है, वो ही अर्जुन है। जिसके रथ में भगवान प्रवेश करते हैं, वो ही अर्जुन है। भद्र कहते ही हैं कल्याणकारी को। सुन्दर कल्याणकारी पार्ट है। उसके आने मात्र से ही स्थापना शुरू हो जाती है। जो अव्यक्त बापदादा बोलते हैं। क्या? तुम बच्चों को नयी दुनियाँ की सौगात बापदादा ने दी है।
Time: 19.25
Student: Baba, Subhadra was abducted. What does it mean in an unlimited sense? Who abducted her?
Baba: Arjun abducted her. Arjun is none other than the one who transforms from a man to Narayan. The one in whose chariot God enters is Arjun. *Bhadra* means beneficial. It is the beautiful and beneficial part. The establishment begins as soon as she arrives. About which Avyakta Bapdada speaks. What? Bapdada has given the gift of the new world to you children.

समय– 20.30
जिज्ञासु – बाबा ने एक वार्तालाप में बोला है – जब शरीर बर्फ में दब जायेगा, तो बाद में भी आत्मा प्रवेश कर सकती है।
बाबा– बर्फ से बाहर आये, बर्फ हटे और आत्मा प्रवेश करे।
जिज्ञासु– कितना दिन में?
बाबा– कोई टाइम निश्चित नहीं है। कोई तो लम्बे समय तक भी बर्फ में दबे पड़े रहेंगे।
Time: 20.30
Student: Baba has said in a discussion, (CD) when the body is buried under ice, then the soul can enter later on as well.
Baba: When they come out of the ice, when the ice melts, the soul will enter.
Student: In how many days?
Baba: The time is not fixed. Some would remain buried under ice for a long period as well.

जिज्ञासु – बाबा, बर्फ में दबने से पहले जो विकलांग हैं, मतिमंद, जो हैण्डीकॅप हैं, उसका शरीर कैसे नार्मल हो जाएगा? जैसे हारमोन परिवर्तन हो जाता है, तो विकलांग कैसे होता? जिसका हाथ टूटा है, पाँव टूटा है। तो वो बर्फ में दबने के बाद पूरा का पूरा परिवर्तन हो जाएगा?
बाबा– हाँ, माना जिसको दोनों भुजाएँ नहीं हैं तो भुजाएँ आ जाएँगी? जिनको दोनों टाँगें नहीं हैं, दोनों टाँगें आ जायेंगी? ये मतलब है? ऐसी तो कोई बात नहीं है। खण्डित मूर्तियाँ भक्तिमार्ग में भी अच्छी नहीं मानी जाती हैं।

Student: Baba, how would the bodies of those, who are handicapped, mentally challenged before being buried under ice become normal (after emerging from the ice)? For example (it has been said that) hormonal changes take place, so, how does it take place in case of handicapped persons, whose arms, legs are broken? So, will all that be completely transformed after being buried under the ice?
Baba: Yes, does it mean that will the one who does not have both arms get them back? Will someone who does not have both limbs get them back? Do you mean to say that? It is not like this. The broken idols are not considered good even in the path of worship.

जिज्ञासु – लेकिन ज्ञान में चले आये तो? बाप के पास तो चले आते हैं तो कुछ तो परिवर्तन होना चाहिए।
बाबा – किसका परिवर्तन होना चाहिए? जिनके हाथ भी कटे हुए हैं, युद्व में मानो किसी की दोनों भुजाएँ कट गईं, दोनों टाँगें कट गयीं, ज्ञान में आ गये तो ज्ञान में आने वाले जो हैं, उनके अंग सरसब्ज हो जायेंगे?
जिज्ञासु – नहीं बाबा, जो लंगड़ा है, वो ज्ञान में आके पुरुषार्थ कर रहा है, तो उसके बाद क्या वो लंगड़ा ही रहेगा?
बाबा– वो तो आजकल प्लास्टिक सर्जरी से लंगड़े भी ठीक हो जाते हैं। लेकिन थोड़ी टाँग होनी तो चाहिए। ये तो कह रहे हैं – बिल्कुल है ही नहीं।
जिज्ञासु – अभी नहीं है।
बाबा– अभी तो अन्धों को भी आँख डाल देते हैं।
Student: But what if they start following the path of knowledge? If they come to the Father, then they should undergo transformation at least to some extent.
Baba: What should be transformed? The persons, whose arms have been cut, suppose both arms of someone have been cut/severed in a war, both the legs have been cut, if they enter the path of knowledge, then will their organs be restored / become normal?
Student: No Baba, suppose a lame person enters the path of knowledge and is making efforts, then after that will he remain lame (after being buried in ice)?
Baba: Now-a-days even the lame persons become normal through plastic surgery. But at least some part of the leg should be present. He is telling that it (i.e. arm/leg) does not exist at all.
Student: It does not exist now.
Baba: Now even the blind persons are implanted with eyes.

जिज्ञासु – बाबा इनका कहने का मतलब है – हैंडिकैप शरीर बर्फ में पड़ेगा और आत्मा ऊपर से आयेगी, तो जो बॉडी है, वो तो हैंडीकैप थी, लेकिन जब उठेगा, उठने के बाद ठीक हो जाएगा?
बाबा – जब आज की प्लास्टिक सर्जरी में जो अंग नहीं होता है, वो भी अंग सरसब्ज कर देते हैं, तो जो असली सर्जरी है उसमें नहीं हो सकता?
Another Student: Baba, he means to say, the handicapped body will remain buried under the ice and the soul comes from above; the body was handicapped, but when he will rise (from ice) will he become normal?
Baba: When, in today's plastic surgery, the organ that was not present is also replaced, then can't it be possible in the true surgery (i.e. world transformation)?

समय – 23.48
जिज्ञासु – बाबा, सद्गुरु का पार्ट कब से चालू होगा?
बाबा – जब सख्ति पूरी होगी। अभी तो बहुत बातों मे लूज़नेस चलती है। सद्गुरु किसी के नाज़–नखरे नहीं देखेगा।

Time: 23.48
Student: Baba, when will the part of *sadguru* begin?
Baba: When there is complete strictness. Now looseness continues in many matters. Sadguru will not tolerate anybody's coquettishness (*naaz-nakhrey*).

समय – 24.14
जिज्ञासु – बाबा, ये जो बाबा का महावाक्य है – "ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश", इसका अर्थ बताइये।
बाबा – अरे! क्या अर्थ पूछ रहे हैं? कौन–सा अनर्थ बुद्वि में.....।
जिज्ञासु – जब ज्ञान में आया, आत्मा का ज्ञान मिल गया। तो बाबा ने बताया – मैं तुम बच्चों को त्रिनेत्री बनाता हूँ।
बाबा – आत्मा का क्या ज्ञान मिल गया?
जिज्ञासु – आत्मा, परमात्मा का तीन कालों का ज्ञान....
Time: 24.14
Student: Baba, tell us the meaning of the following version of Baba, '*gyaan anjan sadguru diya agyaan andher vinaash*' (when the sadguru gave the anjan of knowledge, the darkness of ignorance vanished).
Baba: Arey! What meaning are you asking? Which contrary meaning is coming to your intellect....
Student: When one entered the path of knowledge, one received the knowledge of the soul. So, Baba said, I make you children *Trinetri* (three-eyed).
Baba: Which knowledge of the soul did you receive?
Student: The knowledge of the three aspects of time related to the soul and the Supreme Soul....

बाबा – एक तो होता है बेसिक ज्ञान – सामान्य ज्ञान और एक होता विशेष ज्ञान। तो एडवान्स में क्या एडवांस ज्ञान मिल गया? त्रिमूर्ति का भी ज्ञान मिल गया, उससे अपनी आत्मा को क्या मिल गया? वो तो त्रिमूर्ति का मिल गया। बुद्वि में बैठ गया नम्बरवार कि ये आत्मा ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाने वाली, ये विष्णु के रूप में, ये शंकर के रूप में। परन्तु अपनी आत्मा को क्या मिल गया? अपने को ज्ञान अंजन मिल गया क्या? जब तक अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं हुआ तो ज्ञान अंजन किस बात का मिला? आत्मा को अपने स्वरूप की पहचान होनी चाहिए कि मैं आत्मा कौन? इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर मेरा विशेष पार्ट क्या है? तब अज्ञान अंधेर विनाश। फिर मनन–चिंतन–मंथन स्वतः ही चलने लग पड़ता है। परचिंतन की गुंजाइश ही नहीं रहती।
बाबा – और?
Baba: One is basic knowledge i.e. ordinary knowledge, and one is special knowledge. So, which advanced knowledge did you receive in the advance (party)? You received the knowledge of Trimurty as well; What did our soul obtain from it? The (knowledge of) Trimurty was received. It fitted into the intellect numberwise that this soul plays a part in the form of Brahma, this soul plays a part in the form of Vishnu and this soul plays a part in the form of Shankar. But what did our soul receive? Did we receive the *anjan* (collyrium/eyesalve) of knowledge? Until one does not receive the knowledge of one's own form, then what kind of *anjan* of knowledge did we receive? A soul should have the realization of its form that who am I, the soul? What is my special part on this world stage? Then the darkness of ignorance vanishes / gets destroyed. Then the thinking and churning begins automatically. There is no margin for thinking about others at all.
Baba: Anything else?

जिज्ञासु – सद्गुरु का प्वाइन्ट जुड़ा हुआ है। "ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया जब , तब अज्ञान अंधेरे का विनाश"।

बाबा– हाँ जी, सच्चा गुरु तो वही है जो अपने अनेक जन्मों की कथा–कहानी बता दे। जैसे भगवान ने अर्जुन से कहा – अर्जुन, तू अपने जन्मों को नहीं जानता। मैं तेरे को बताता हूँ। तो कहेंगे – "ज्ञान अंजन मिला, दिव्य दृष्टि मिली"।

Student: The point of sadguru is connected with it. 'When Sadguru gave the anjan of knowledge, the darkness of ignorance is destroyed.

Baba: Yes, the true Guru is the one who narrates the story of our many births. For example God told Arjun, – Arjun, you do not know about your births. I tell you. So, it would be said, 'he received the anjan of knowledge, divine vision.'

समय – 26.31

जिज्ञासु – बाबा, अभी तुरन्त बाबा ने बोला जब मनन–चिंतन स्वतः होने लगा, बाबा का ज्ञान सुनने के बाद जब हम लोगों का मनन–चिंतन होता है, तो बाबा की याद तो होती है लेकिन बाबा ने मुरली में बोला है मनन–चिंतन याद नहीं है। याद अलग चीज़ है, मनन–चिंतन सुप्त स्थिति में है।

Time: 26.31

Student: Baba, just now Baba said that when thinking and churning begins automatically; after listening to Baba's knowledge when we people start thinking and churning, then we do remember Baba, but Baba has said in a Murli that thinking and churning (of knowledge) is not the remembrance. The remembrance is different; thinking and churning is a (kind of) stage of sleep.

बाबा– ये तो तुम्हारी अपनी मनमत है। मनन–चिंतन–मंथन में रहना – ये भी सेकेण्ड क्लास याद है; परन्तु मुरलियों के ज्ञान का मनन–चिंतन–मंथन होना चाहिए, आधार मुरली होना चाहिए। मनन–चिंतन–मंथन की स्टेज सूक्ष्म स्टेज है, अव्यक्त स्टेज है। अव्यक्त स्टेज को ये कहें कि – याद है ही नहीं, ऐसे नहीं कह सकते। सिर्फ बिन्दु रूप की याद में टिकना ही याद है, वो तो ऐसी स्टेज है जहाँ पाप तेजी से भस्म होते हैं। लेकिन सूक्ष्म मनन–चिंतन–मंथन किये बगैर कोई आत्मा आत्मिक स्थिति में सदा काल के लिए टिक भी नहीं सकती। जो आत्मा जितना मनन–चिंतन–मंथन के विस्तार में जाने वाली होगी, वो उतना ही सार में टिकने वाली बनेगी।

Baba: This is your own opinion. Being in a stage of thinking and churning is also a second class remembrance, but the thinking and churning should be about the knowledge of the Murlis; the basis should be the Murlis. The stage of thinking and churning is a subtle stage, avyakt stage. We cannot say that avyakt stage is not remembrance at all. Only becoming constant in the remembrance of the point-like form is (the real) remembrance; it is such a stage where the sins are burnt rapidly. But no soul can become constant in the soul conscious stage forever without sutble thinking and churning. The more a soul goes into the expanse of thinking and churning, the more it will become constant in the essence.

जिज्ञासु – तो मनन–चिंतन–मंथन किस आधार पर होता है? निराकारी स्थिति के आधार पर या..... ।

बाबा– बाप की याद जितनी जास्ती बढ़ती जायेगी, मनन–चिंतन–मंथन भी बढ़ता जायेगा। और बाप की याद उतनी ही बढ़ेगी, जितना बाप बच्चों को याद करेगा। और बाप उन्हीं बच्चों को याद करेगा, जो सर्विस में तत्पर्य होंगे। सर्विसेबुल बच्चे जो हैं, उनको स्वतः ही मनन–चिंतन–मंथन उठ खड़ा होता है क्योंकि बाप उन बच्चों को याद करता है, सर्विस की मदद देता है। कोई पावरफुल आत्मा समझने वाली सामने आ गयी तो दृष्टि की मदद देता है, वाचा की मदद देता है, वाइब्रेशन की मदद देता है।

Student: So, what is the basis of thinking and churning? On the basis of incorporeal stage or on.....?
Baba: The more the remembrance of the Father increases, the thinking and churning will also increase. And the remembrance of the Father will increase only to the extent the Father remembers the children. And the Father will remember only those children who remain busy in service. Serviceable children start thinking and churning automatically because the Father remembers those children, helps them in service. When a powerful soul, which understand (the knowledge), comes in front of the children, then He gives the help of drishti, gives the help of speech, gives the help of vibrations.

समय – 38.38
जिज्ञासु – बाबा, आदि में गीता माता में प्रवेश करके सुनना–सुनाने का काम किया था, तो फर्स्ट ब्राह्मण सो फर्स्ट देवता, तो उसकी मम्मी कौन हुई? सेवकराम की मम्मी कौन?
बाबा – सेवकराम की दादी अम्माँ कौन है और परदादी अम्माँ कौन है? अरे! फिर तो 84 जन्म के भी हिसाब–किताब निकल आने चाहिए। और बाबा तो कहते हैं – मैं किसी के पार्ट थोड़े ही बताता हूँ। बापदादा कोई के पार्ट बताते हैं क्या? हर आत्मा अपने–अपने गुणों से, अपनी–अपनी वाचा से, अपने–अपने वाइब्रेशन से, अपनी–अपनी कथनी और करनी से अपने आप अपने को प्रत्यक्ष करेगी। सेवकराम का बाप होगा ,वो अपने को बाप प्रत्यक्ष कर देगा। जो डाड़े होगा, वो डाड़े प्रत्यक्ष कर देगा। दादी अम्माँ होगी, तो अपने को दादी अम्माँ प्रत्यक्ष कर देगी।
Time: 38.38
Student: Baba, in the beginning, He had entered Gita mata and had performed the task of listening and narrating, so who is the mother of the first Brahmin and hence the first deity? Who is the mother of Sevakram?
Baba: Who is the grandmother of Sevakram and who is his great-grandmother? Arey! Then the accounts of 84 births should also emerge. And Baba says, I do not narrate anybody's part. Does Bapdada tell anybody's part? Every soul would reveal itself automatically through its virtues, through its words, through its vibrations, through its speech and actions. Sevakram's father would reveal himself as his father. His grandfather would reveal himself as his grandfather. If someone is his grandmother, then she will reveal herself as his grandmother.

जिज्ञासु – बाबा, वो सब तो अभी ज्ञान में आ गये होंगे।
बाबा– कौन?
जिज्ञासु – सेवकराम की मम्मी, दादी।
बाबा – सेवकराम के क्या, आपके 84 जन्मों का परिवार ज्ञान में नहीं आ गया होगा? हँ?
Student: Baba, they all must have entered the path of knowledge by now.
Baba: Who?
Student: Sevakram's mother, grandmother.
Baba: Not just Sevakram, but would your family of 84 births not have entered the path of knowledge? Hm?

समय – 30.30
जिज्ञासु – बाबा, शरीर सड़ता जायेगा और आत्मा पावरफुल बनती जाएगी। सड़ते माना क्या?
बाबा – बीमारियाँ बढ़ती जायेंगी। दुनियाँ में केमिकल खाद बढ़ती जा रही है, तो केमिकल खाद बढ़ने से अन्न प्रदूषित होता जा रहा है, वायुमण्डल प्रदूषित होता जा रहा है, जिसकी वजह से शरीर सड़ेंगे या पावरफुल बनेंगे? सड़ते जावेंगे। लेकिन सड़े हुए शरीर को भी चलाने के लिए आत्मा पावरफुल होती जाएगी। जैसे बूढ़ी माताओं के लिए बोला है – बूढ़ी माताओं को सेवा के पंख लग जावेंगे।

Time: 30.30
Student: Baba (it has been said that) the body would go on rotting and the soul would go on becoming powerful. What is meant by 'rotting'?
Baba: The diseases would go on increasing. The chemical fertilizers are increasing in the world; so because of the increase (in the use) of chemical fertilizers, the foodgrains are becoming polluted, the atmosphere is becoming polluted because of which will the bodies rot or become powerful? They will go on rotting. But in order to work even through the rotten body, the soul would go on becoming powerful. For example it has been said for the elderly mothers that the old mothers will get the wings of service.

समय – 31.20
जिज्ञासु – बाबा, त्रेतायुग में बोला – बाह के प्यार से बच्चों का जन्म होगा। तो बाह तो शरीर का अंग है।
बाबा – शरीर का अंग है लेकिन भ्रष्ट इन्द्रियाँ हैं या श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं ?
जिज्ञासु – श्रेष्ठ इन्द्रियाँ।
बाबा – फिर?
Time: 31.20
Student: Baba, it has been said that in the Silver Age, children will be born through the love of arms. But arms are part of the body.
Baba: They are the parts of the body, but are they unrighteous organs or righteous organs?
Student: The righteous organs.
Baba: Then?

समय – 31.41
जिज्ञासु – बाबा, बाबा जब मुरली चलाते हैं तो हिंदी में ही बात की है। तो देखा है कि हिंदी में मैक्सीमम स्त्रीलिंग है। जाती है, खाती है – ये सब आदि।
बाबा –जाती है, खाती है ! खाता है, जाता है नहीं है?
जिज्ञासु – कम है।
बाबा– कम है?
जिज्ञासु – लेकिन ज्यादा स्त्रीलिंग का प्रभाव है।
बाबा– ऐसा तो कुछ नहीं है।
Time: 31.41
Student: Baba, Baba has spoken only in Hindi when He narrates Murlis. So, it has been observed that the gender of maximum words in Hindi is feminine. '*jaati hai* (she goes), *khaati hai* (she eats) – all these words, etc.
Baba: '*Jaati hai, khaati hai*'! Is there not '*khata hai* (he eats), *jata hai* (he goes)'?
Student: It is less.
Baba: Is it less?
Student: But there is more influence of feminine gender.
Baba: It is not so.

जिज्ञासु – हिंदी में स्त्रीलिंग का प्रभाव क्यों है?
बाबा – ऐसा तुम्हारा समझ का प्रभाव है।
जिज्ञासु – मैक्सीमम है।
बाबा – ऐसा कुछ नहीं है।
जिज्ञासु – हिंदी लिटरेचर में ऐसे है।
बाबा – हिन्दी लिटरेचर में क्या है?
जिज्ञासु – इसके साथ कोई ज्ञान का लिंक है?

बाबा – क्या लिंक है?
Student: Why is there an influence of feminine gender on Hindi (language)?
Baba: It is an influence of your understanding.
Student: It (i.e. use of femnine words) is maximum.
Baba: It is not so.
Student: It is like this in the Hindi literature.
Baba: What is there in the Hindi literature?
Student: Does it have any link with (the Godly) knowledge?
Baba: What is the link?

जिज्ञासु – हिंदी में, जैसे बाबा आत्मा तो पुरुष है। फिर भी कहते हैं – परमात्मा प्रवेश करती है, जाती है। माना आत्मा प्रवेश करती है। आत्मा तो पुरुष है। फिर भी कहते हैं – परमात्मा प्रवेश करती है, जाती है। माना आत्मा प्रवेश करती है। तो आत्मा तो पुरुष।
बाबा – रूह जाती है – ऐसे कहा जाता है?
जिज्ञासु – रूह का नहीं सुना। आत्मा के बारे में सुना है – आत्मा प्रवेश करती है।
बाबा– तो?
जिज्ञासु – तो ये स्त्रीलिंग के ऊपर लागू होता है।
बाबा – आत्मा प्रवेश करती है तो शरीर में आ गयी ना। और शरीर तो स्त्रीलिंग ही हो गया। पाँच तत्वों का पुतला ही तो है। पाँच तत्वों का पुतला प्रकृति ही तो है।
Student: Baba, in Hindi, for example, the soul is masculine; even so it is said, *Parmatma pravesh kartee hai* (the Supreme Soul enters), *jaati hai* (goes). The soul is male. Even so it is said - *Parmatma (Supreme Soul) pravesh kartee hai (enters), jaati hai (goes).* I mean to say '*aatma pravesh kartee hai'* (a soul enters). But the soul is male.
Baba: Is it said – *rooh jaati hai* (the soul goes)?
Student: I have not heard about (the use of the word) *rooh*. I have heard about *aatma* (soul) - *'aatma pravesh kartee hai'* (a soul enters).
Baba: So?
Student: So, it is applicable to the feminine gender.
Baba: '*aatma pravesh kartee hai'* (a soul enters) means it has entered the body, hasn't it? And the body is feminine. It is an effigy (*putlaa*) of five elements. It is an effigy of the five elements, i.e. the nature.

जिज्ञासु – बाबा, ऐसे तो एक पुरुष है – सुप्रीम सोल पिता। ऐसे तो पकड़ा जाए तो सारे ही स्त्री हैं। सुप्रीम सोल को छोड़कर सारे ही स्त्री हैं।
बाबा – हाँ, सुप्रीम सोल के अलावा सारी ही स्त्रियाँ हैं? कैसे? तो राम बाप है एक, तुम सब हो सीताएँ, ये किसके लिए बोला गया?
जिज्ञासु – सुप्रीम सोल के लिए।
बाबा – फिर? तुम सब हो सजनियाँ और साजन है एक – ये किसके लिए बोला गया?
जिज्ञासु – हम आत्माओं के लिए।
Student: Baba, in a way, there is only one male the Supreme Soul Father. From one point of view everyone is female. Except the Supreme Soul everyone else is a female.
Baba: Yes, except the Supreme Soul everyone else a female? How? So, one is father Ram and you all are Sitas. For whom was this said?
Student: For the Supreme Soul.
Baba: Then? All of you are wives and the husband is one. For whom was this said?
Student: For us souls.

बाबा– आत्माओं के लिए? माना सजनी को शरीर नहीं है? सजनी को भी शरीर है और साजन को भी शरीर है, तब ही साजन–सजनी का संबंध बनता है। नहीं तो आत्मिक रूप में बाप और बच्चों का ही संबंध है। शरीर में आने के बाद साजन–सजनी और दूसरे प्रकार के संबंध भी बनते हैं।
जिज्ञासु – क्योंकि इस रामवाली आत्मा के शरीर में सुप्रीम सोल पावरफुल है। सबसे ज्यादा पावरफुल इसलिए।
बाबा – हाँ।
Baba: For the souls. Does it mean that the wife does not have a body? The wife has a body and the husband has a body as well. Only then the relationship of husband and wife developes. Otherwise, there is only a relationship of father and children in the form of a soul. After coming in the body the relationship of husband and wife and other types of relationships are also established.
Student: It is because the Supreme Soul is powerful in the body of this soul of Ram. It is because He is the most powerful one.
Baba: Yes.

समय – 34.25
जिज्ञासु – बाबा, दस वर्ष से रहने वाला, ध्यान में जाती थी। 2036 से पहले। 2036 के पहले 1926–1927 में उसको भागीदार बनाया?
बाबा – ठीक है, 10 साल से उसको दुकान में नौकर रखा।
जिज्ञासु– भागीदार कब बनाया?
बाबा– भागीदार को 36 से 10 साल पहले 26 में दुकान संभालने के लिए नौकर के रूप में रखा गया। 10 साल से रहने वाला माना भागीदार की तरफ इशारा किया।
जिज्ञासु – लेकिन भागीदार कब से बनाया?
बाबा– 10 साल अभी बता तो दिया।
Time: 34.25
Student: Baba, the one who used to live since ten years, used to go into trance. Before 2036 (i.e. before 1936). Before 2036 (i.e. before 1936) was he made the partner in 1926-27?
Baba: It is correct; he was appointed as a servant in the shop since 10 years.
Student: When was he made the partner?
Baba: The partner was appointed as a servant to take care of the shop 10 years before 1936, i.e. in 1926. 'The one living since 10 years' means that a hint was given towards the partner.
Student: But, since when was he made the partner?
Baba: Just now it was told 'ten years'.

जिज्ञासु – उससे पहले क्या नौकर था?
बाबा– उससे पहले काहे के लिए? सन् 26 से ही नौकर था। उससे पहले तो उनका बहनोई था, उसकी अपनी अलग दुकान थी, लेकिन वो सच्चा व्यक्ति था। दिखावा करता नहीं था। इसलिए दुकान चलती नहीं थी।
जिज्ञासु – सन् 1936–37 में गीता माता में सुप्रीम सोल प्रवेश करते हैं तो उसी समय गीता माता की उम्र 60 साल हो गयी।
बाबा – ठीक है।
जिज्ञासु – तो वो भी तो ब्रह्मा है। वो भी तो 100 साल होने के बाद 76 में मृत्युलोक से अमरलोक में जाना चाहिए।
बाबा– अरे! पिता के रूप में कब कार्य हुआ? "अहं बीज प्रदः पिता"। वो कौन–सा स्वरूप है? वो तो एक ही है ना।

Student: Was he a servant before that?
Baba: Why before that? He was a servant since 1926 itself. Prior to that he was his brother-in-law. He had a separate shop, but he was a true person. He did not show off. That is why his shop was not flourishing.
Student: The Supreme Soul enters Gita mata in 1936-37. So, at that time the age of Gita mata became 60 years.
Baba: It is correct.
Student: She too is a Brahma. She too should have gone from the abode of death to the abode of immortality in 1976 after attaining the age of 100 years.
Baba: Arey! When was the part played in the form of father? *'Aham beej pradah pita'*. Which form is that? That is only one, isn't it?

समय – 36.30
जिज्ञासु– रिइनकारनेशन बाबा ने बोला – पुनरावर्तन, रिइनकारनेशन का बेहद का अर्थ क्या? जैसे इनकारनेशन, कोई धर्मपिता अवतरण करते हैं उसके लिए लागू होता है लेकिन शिवबाबा जब आते हैं तो उसको दिव्य अवतरण या रिइनकारनेशन कहते हैं?
बाबा– 76 में रिइनकारनेशन कहेंगे, पहले 36 में इनकारनेशन हुआ। सन् 76 में बाप का रिइनकारनेशन कहें।
जिज्ञासु – लेकिन द्वापर से जब पैगम्बर आते हैं, तो उसको क्या दिव्य अवतरण कहेंगे?
बाबा– वो तो प्रवेश करते हैं।
Time: 36.30
Student: Baba spoke about reincarnation. What is the meaning of reincarnation in an unlimited sense? For example incarnation is applicable to the religious fathers who incarnate, but when Shivbaba comes, is it called divine incarnation or reincarnation?
Baba: Will it be called reincarnation in 1976? Earlier it was incarnation in 1936Will it be called the reincarnation of the Father in 1976?
Student: But when messengers come from the Copper Age, then will it be called divine incarnation?
Baba: They enter.

समय – 37.27
जिज्ञासु – बाबा, जैसा बीज वैसा फल। मनुष्य आत्मा जब शरीर छोडेंगे तो मनुष्य ही जन्म लेंगे। जैसे आम का पेड़ होगा तो.....
बाबा– आप आगे क्या कहना चाहते हैं?
जिज्ञासु – जैसे मनुष्य आत्मा शरीर छोडते हैं तो मनुष्य ही बनते हैं।
बाबा– हाँ जी। कोई नई बात कहना चाहते हैं?
जिज्ञासु – वही पूछ रहे हैं बाबा कि जैसा बीज वैसा फल।
बाबा– अरे! ये तो बेसिक नालेज़ में ही ये बात समझा दी गयी कि – मनुष्य आत्मा 84 लाख योनियों में नहीं जाती है। मनुष्य की आत्मा है तो मनुष्य जाति में ही जन्म लेगी। दूसरी जातियों में जन्म नहीं होता है।
Time: 37.27
Student: Baba, as the seed so the fruit. When a human soul leaves the body, it will take birth as a human being only. For example, if it is a mango tree...
Baba: What do you want to say further?
Student: For example, when a human soul leaves its body, it becomes a human being only.
Baba: Yes, do you want to say anything new?
Student: Baba, that is what I am asking, as the seed so the fruit.

Baba: Arey! This was explained in the basic knowledge itself that a human soul does not take birth in 84 lakh species. If it is a human soul, it will take birth in human species only. It does not take birth in other species

जिज्ञासु – अच्छा, फिर बाबा एडवान्स में बताया गया कि हार्मोन्स चेंज होते हैं मतलब.....
बाबा– बार–बार बेसिक नालेज़ में जाने की इच्छा हो रही है क्या? अभी पक्का नहीं हुआ?
जिज्ञासु– बी.के. वाले अभी कहते हैं कि – जैसा बीज वैसा फल।
बाबा– हाँ, हाँ, जैसा बीज वैसा फल। मनुष्य जाति की आत्मा का बीज है, तो जो फल होगा और जो वृक्ष होगा, वो मनुष्य का ही वृक्ष होगा या कोई दूसरा होगा?
Student: OK, then Baba it was told in the advanced knowledge that the hormones change, i.e.....
Baba: Do you want to go to the basic knowledge again and again? Have you not become firm yet?
Student: Now the BKs say that as the seed so the fruit.
Baba: Yes, yes, as the seed so the fruit. If the seed is of the soul of a human species, then the fruit and the tree will be of human beings only, or will it be something else?

समय – 38.55
जिज्ञासु – बाबा, अष्टदेव के लिए बोला गया कि अख़िरी जन्म में आ करके नीचे गिरते हैं। माना द्वापरयुग और कलियुग के 63 जन्मों में से एक जन्म में दूसरे–दूसरे धर्मों में चले जाते हैं। 8 आत्माएँ हैं, एक–एक आत्मा, एक–एक धर्म में चली जाती है। तो इसको गिरना कहेंगे ? और बाकी द्वापरयुग से 63 जन्म से 62 जन्म.....
बाबा – अपने धर्म में तो पक्के रहते हैं। परधर्मो भयावः में तो नहीं जाते हैं। "स्वधर्मे निधनं श्रेयः"– अपने धर्म में लड़ते–लड़ते शरीर छूट जाए, कोई हर्ज़ा नहीं; लेकिन दूसरे धर्म की दासता स्वीकार करें, हाथ उठा लें और शस्त्र छोड दें, वो तो फिर दासत्व बनना पड़े। दास–दासीपना स्वीकार करना पड़ेगा।'' पराधीन सपनेहु सुख नाहीं''। जो अधीन हो जाता है उसको तो फिर सुख होता ही नहीं है। स्वाधीनता में ही सबसे बड़ा सुख है। इसलिए स्वधर्म में रहना अच्छा है।
Time: 38.55
Student: Baba, it was said about the eight deities that they experience downfall in the last birth. It means that among the 63 births of the Copper Age and the Iron Age, they go to other religions for one birth each. There are eight souls; each of those souls goes to a different religion. So, will this be called experiencing downfall? And from the Copper Age, in 62 out of the 63 births.....
Baba: They remain firm in their own religion. They do not go to the other religions which are fearful (*par dharmo bhayavah*). '*Swadharmey nidhanam shreyah*', it does not matter if one loses the body while fighting for the cause of his own religion, but if he accepts the slavery of the other religion, if he raises his hands (in defeat) and leaves his weapons, then he will have to become a servantHe will have to accept becoming servants and maid servants. '*Paraadheen sapnehu sukhh naahi*'. The one who becomes a slave cannot experience happiness (even in the dreams) at all. The biggest happiness lies in being sovereign. That is why it is better to be in one's own religion (*swadhrma*).

जिज्ञासु – तो अष्ट देव का कोई आत्मा दूसरे धर्म में जन्म लिया कि उसको...
बाबा– जन्म लेना बात अलग होती है और कनवर्ट होना बात अलग होती है।
जिज्ञासु – कनवर्ट होना माना एक धर्म में जन्म लिया फिर दूसरा धर्म .....
बाबा– अपना जो शरीर है, वो जिस धर्म में पैदा हुआ, उस धर्म को छोड़ दिया माना परधर्म में चला गया। जन्म लेना अलग बात और जन्म ले करके फिर दूसरे धर्म में कनवर्ट होना – ये नीचता की बात हो गई।
जिज्ञासु – माना दूसरों की पराधीनता स्वीकार नहीं करते हैं।

बाबा – हाँ जी।
Student: So, did any soul among the eight deities take birth in the other religions or...
Baba: To take a birth is a different thing and to convert is a different thing.
Student: To convert means to take a birth in one religion and then second religion....
Baba: If someone leaves the religion in which his body takes birth, it means that he adopted a foreign religion. To take birth is a different thing and to convert into other religion after taking birth is a lowly matter.
Student: It means that they do not accept the subordination of others.
Baba: Yes.

समय – 41.20
जिज्ञासु – बाबा, 108 में से 100 आत्माएँ राजाएँ बनते हैं तो उसमें अष्ट देव सम्राट बनते या महाराजा बनते हैं? क्या बनते हैं?
बाबा – अष्ट देव हैं, वो पूर्वज हैं और जो जितना ही पुराना होता है, उतना ही पावरफुल होता है लेकिन कलियुग के अंत में जा करके संग के रंग में आते–आते उतना ही कमजोर बन जाता है क्योंकि अष्ट देव ऊँच ते ऊँच पद पाने वाले भी हैं और फिर नीच ते नीच गिरने वाले भी हैं।
Time: 41.20
Student: Baba, 100 out of 108 souls become kings; so among them, do the eight deities become Emperors (*samraat*) or *Maharajas*? What do they become?
Baba: The eight deities are the ancestors (*poorvaj*) and the older one is the more powerful he is, but at the end of the Iron Age, he is coloured by the company and becomes weak to the that extent because the eight deities achieve the highest on high post too and later on they also experience the maximum downfall.

जिज्ञासु – बाबा पहला जो है वो महाराजा बनता है या सम्राट बनता है?
बाबा– राजा ऊँचा होता है या महाराजा ऊँचा होता है? और राजाएँ अनेक हुए लेकिन महाराजाएँ बहुत थोड़े हुए हैं।
जिज्ञासु – लेकिन महाराजा बनने का जो नियम, परम्परा चालू हुआ वो द्वापर से हुआ है ना?
बाबा– सतयुग में होते हैं महाराजाएँ और त्रेता में होते हैं राजाएँ। फिर द्वापर में होते हैं महाराजाएँ और राजाएँ और कलियुग में होते हैं सिर्फ राजाएँ और कलियुग के अंत में जब आर्यसमाजी आते हैं, तो उस समय महाराजा और राजा ये टाइटिल मात्र रह जाते हैं। उनमें होता कोई भी नहीं।
Student: Baba, does the first one become Maharaja or Samraat (Emperor)?
Baba: Is a Raja higher or Maharaja higher? And there were many Rajas, but there were very few Maharajas.
Student: But the rule, the tradition of becoming Maharajas has begun from Copper Age, hasn't it?
Baba: There are Maharajas in the Golden Age, and there are kings (Rajas) in the Silver Age. Then there are Maharajas and Rajas in the Copper Age and in the Iron Age there are only Rajas and at the end of the Iron Age, when the Aryasamajis come, the Maharajas and Rajas become just titles. None of them are actually (Rajas/Maharajas).

समय – 43.25
जिज्ञासु – कृष्ण का जन्म कारागार में होता है ना, उसके पिता जी उसको नन्द के घर में रखते हैं। वहाँ से कन्या को जेल में लेकर आते हैं और कंस उसको मारने आया था। वो कन्या हाथ से निकल जाती है और बोलती है – "तुम्हारा वध करने वाला गोकुल में जन्म ले चुका है।" वो कौन है और इसका ज्ञानमार्ग में अर्थ क्या है?

बाबा – कंस के कुसाबे में सभी नारायण जैसे 7 कृष्ण बच्चे आ गये। आठवाँ कृष्ण बच गया। ऐसे ही ढेर सारी कुमारियाँ भी कुसाबे में आ गयीं और एक कुमारी बच गयी। तो जो बचने वाली कुमारी है, वही राधा है। वो कंस के हाथ से छूट गयी। इसलिए दिखाते हैं – यशोदा से उसका जन्म हुआ और कृष्ण का जन्म देवकी से हुआ। ट्रान्सफर हो गया।

Time: 43.25

Student: Krishna is born in a jail, isn't he? His father keeps him in the house of Nand (his friend). From there, he brings a daughter to the jail and Kansa comes to kill her. That virgin slips out of his hand and says, 'The one who is going to kill you has already taken birth in Gokul'. Who is she and what is its meaning in the path of worship?

Baba: All the seven Narayan-like children, Krishnas came under the control of Kansa. The eighth Krishna was saved. Similarly, many Kumaris too came under his control and one Kumari was saved. So, the Kumari who survived is Radha. She slipped from the hands of Kansa. That is why it is shown that she was born from Yashoda and Krishna was born from Devaki. A transfer (i.e.exchange) took place.

समय – 45.54

जिज्ञासु – दिन दुगना और रात चार गुना, इसका अर्थ क्या है?

बाबा– पुरुषार्थ की बात बताई। दिन दुगुना, रात चौगुना जिनका पुरुषार्थ चढ़ती कला में जाता है, वो मल्टीप्लाई होता रहता है। दिन में भी दुगुना पुरुषार्थ करते हैं और रात–रात में जाग करके रात में भी चौगुना पुरुषार्थ करते हैं। दिन दुगुना, रात चौगुना माना मल्टीप्लिकेशन होता जाता है। घटती कला की बात ही नहीं।

Time: 45.54

Student: What does '*din dugna aur raat char guna'* (progressing two folds in the day and four folds in the night) mean?

Baba: It is about making efforts. (It is about) the ones whose efforts increase two folds in the day and four folds at night, i.e. it keeps multiplying. They make two fold effort in the day and they make four fold effort even at night, by remaining awake in the night. 'Two folds in the day and four folds at night' means that multiplication keeps taking place. There is no question of decreasing celestial degrees at all.

समय – 46.49

जिज्ञासु – बाबा, सेवाधारी बच्चों को बाप याद करते हैं। तो ऐसी कौन–सी सेवा में बच्चे रहते हैं तो बाप उनको याद करते हैं? जैसे ज्ञान लेने के बाद भी बाहर की दुनियाँ में काम धंधा करते हैं.....

Time: 46.49

Student: Baba, the Father remembers the sevadhari children. So, what kind of a service do those children do, so that the Father remembers them? For example do they work in the outside world even after obtaining knowledge? ...

बाबा – ज्ञान मिलने के बाद एक होता है पेट के लिए सेवा करना और एक होता है आत्मा के लिए पुरुषार्थ करना, सेवा करना। तो जो पेट के लिए धन्धा किया जाता है, वो तो सिमित हो गया। वो ईश्वरीय सेवा में नहीं गिना जाता। अपनी पेट की भी चिंता न करके जो परमार्थ के लिए सेवा की जाती है, वो ईश्वरीय सेवा में गिनी जाती है। जैसे परमात्मा को अपना रथ नहीं है, वो परमपिता परमात्मा स्वार्थ रहित हो करके सेवा करता है। जिस तन के द्वारा वो सेवा होती है, उसका सारा हिसाब–किताब उसके तन के द्वारा बन जाता है। ऐसे ही भगवान बाप आकर जब बताते हैं, तसल्ली देते हैं कि – मेरे बच्चों को दो रोटी ज़रूर मिलेगी। दुनियाँ चाहे भूख मरे लेकिन मेरे बच्चे भूख नहीं मर सकते। जिन बच्चों को मेरे बच्चे कहा, वो बाप का

धन्धा करने वाले बच्चे होंगे या सिर्फ अपने पेट और अपने परिवार का पेट पालने वाले बच्चे होंगे?
(सभी ने कहा – बाप का धन्धा करने वाले बच्चे होंगे।)
Baba: After obtaining knowledge, one thing is to do service for one's stomach and another thing is to make efforts, to do service for the soul. So, the work that is done for the stomach is in a limited sense. That is not counted in Godly service. The service that is done for the benefit of others without worrying even about one's stomach is counted in Godly service. Just as the Supreme Soul does not have his chariot; that Supreme Father Supreme Soul serves selflessly. The karmic account of the body through which that service is performed is credited to his account. Similarly, when God the Father comes and tells us, gives us an assurance, My children will certainly receive two *roties* (to eat). Even if the world dies of hunger, My children cannot die of hunger. Will the children whom He addressed as 'My children' be the children who do the Father's work or will they be the ones who take care of their own stomach and the stomachs of their family members?
(Everyone said, 'They will be the children who do the Father's work'.)

बाबा – उनके लिए ये बात लागू होती है।
जिज्ञासु– जैसे तीन सेवा होती है। मनसा, वाचा, कर्मणा।
बाबा– मनसा, वाचा, कर्मणा – ये तीनों सेवा लौकिक में भी होती हैं और तीनों सेवा ईश्वरीय सेवा के आधार पर भी होती हैं लेकिन जो ईश्वरीय सेवा के आधार पर मनसा, वाचा, कर्मणा अर्पण करते हैं, उनको बाप याद करते हैं।
Baba: This applies to them.
Student: For example there are three kinds of services, (service) through thoughts, through words, through actions.
Baba: Thoughts, words and actions all these three services are done in the lokik world as well as on the basis of Godly service. But, the Father remembers those who dedicate their thoughts, words and actions on the basis of Godly service.

समय – 49.44
जिज्ञासु – बाबा, अलौकिक सेवा में बाबा ने बोला – याद करना, ये भी सेवा है और संगठन में जाना ये भी एक पुरुषार्थ है। तो अलौकिक सेवा के अंडर में चला जाता है? संगठन क्लास में आना और बाप को याद करना, मनन–चिंतन करना – ये भी तो एक सेवा में चला जाता है।
बाबा – जिसको सेवा का अभ्यास हो जाता है, वो अभ्यासी व्यक्ति बिना सेवा के एक क्षण भी रह ही नहीं सकता। रात में सोता है, तो भी मनसा सेवा करता है और संगठन में जाना, वो तो सप्ताह में एक बार हो गया। बाकी?
Time: 49.44
Student: Baba, Baba said about alokik service that remembrance is also a service; and attending *sangathan* (gathering) is also a kind of effort. So, is it counted under alokik service? Attending the *sangathan* class and remembering the Father, thinking and churning (the knowledge) even this is counted under service.
Baba: The one who practices service, that person cannot remain without service even for a second. Even when he sleeps in the night, he does service through his mind and as regards attending the sangathan that happens once in a week. What about the rest of the time?

जिज्ञासु – गीतापाठशाला जाना।
बाबा – गीतापाठशालाएँ तो मालूम हैं सबको कितने संगठन चल रहे हैं। गीतापाठशालाओं में मोस्टली देखा जाए तो वो ही युगल बैठे हैं, वो भी पता नहीं आगे–पीछे साइन कर देते हो।

अभी तो सब मुसलमान बन गये, सब क्रिश्चियन बन गये। सात दिन में एक बार अटेंड करना, यही बड़ी मुसीबत है।
Student: Going to the *gitapathshala*.
Baba: Everyone knows how many *sangathan* (classes) are being held in the *gitapathshalas*. It can be seen mostly in the *gitapathshalas* that only that couple is sitting (for the class). It is not sure even about them whether they sign in proper order or not (kripaya is baarey may Baba say clarify kar lein ki voh kya kahnaa chaahtey hain). Now everyone became a Muslim, everyone became a Christian.Even to attend (classes) once in seven days is a big problem.

समय – 50.58
जिज्ञासु – बाबा, निःसंकल्पी स्टेज तब बन सकती है जब अपने अविनाशी पार्ट का पता पड़ जाए। मैं आत्मा कौन–सी देवी–देवता का पार्ट बजाने वाली आत्मा हूँ। तो कौन–सी देवी–देवता इसका मतलब क्या?
बाबा – तैंतीस करोड़ देवी–देवताएँ हैं तो क्या झूठे हैं?
जिज्ञासु – 33 करोड़ देवता तो गिनती में मालूम नहीं हैं। 5, 6, 8, 10 देवी–देवता ऐसे मालूम हैं।
बाबा– 5, 6, 7, 8 ही मालूम हैं?
Time: 50.58
Student: Baba, the thoughtless stage can be achieved when one comes to know of his imperishable part. I, the soul am going to play the part of which deity? So, what is meant by 'which deity'?
Baba: When there are 33 crore deities, are they false?
Student: We don't know the numberwise 33 crore deities. We know just 5, 6, 8, 10 deities.
Baba: Do you know just 5, 6, 7, 8 deities?

जिज्ञासु – 33 करोड़ कहाँ से?
बाबा – गाँव–गाँव में, शहर–शहर में ढेरों देवी–दवताओं की पूजा होती है, वो नहीं मालूम है?
जिज्ञासु – वो तो एक ही है, राम–कृष्ण.....।
बाबा – अच्छा अष्ट देव नहीं हैं? उन अष्ट देवों के अलावा गणेश और हनुमान नहीं हैं?
जिज्ञासु – वो तो गिनती में जो सौ होगा.....।
बाबा– अच्छा, सौ हो गये ना। ऐसे ही गिनती में हज़ार भी हो सकते हैं।
जिज्ञासु– कैसे बाबा?
बाबा– कैसे? कैसे की क्या बात है? माने आत्माएँ अलग–अलग पार्टधारी नहीं हैं?
Student: Where are the 33 crore?
Baba: Don't you know the numerous deties that are worshipped in every village, every city?
Student: That is just the same ones, Ram and Krishna....
Baba: OK, are there not the eight deities? Apart from those eight deities, are there not Ganesh and Hanuman?
Student: That may add up to about hundred.....
Baba: OK, there are hundred, aren't there? Similarly, they could add up to thousand.
Student: How Baba?
Baba: How? Where does the matter of 'how' arise? Do you mean that the souls are not different actors?

जिज्ञासु – नारायण तो अनेक नारायण हो सकते हैं, अनेक लक्ष्मी हो सकती हैं।
बाबा – उनके जो राज्यधारी हैं, जो उनके राज्य को, अधिकार को संभालने वाले हैं, वो साथी नहीं होते हैं? नारायण अकेला सारे विश्व के राज्य को संभाल लेगा या नंबरवार राज्यअधिकारी भी होंगे?

जिज्ञासु – राज्यअधिकारी भी होंगे।
बाबा – तो वो देवी–देवताएँ नहीं होते हैं?
Student: As regards Narayan, there could be many Narayans, there could be many Lakshmis.
Baba: Their officials, who take care of their kingdom, exercise their powers, are they not their companions? Will Narayan alone look after the kingship of the entire world or will there be numberwise officials as well?
Student; There will be officials too.
Baba: So, are they not deities?

जिज्ञासु – बाबा, इसका मतलब राक्षस देवी–देवता भी होता है ।
बाबा – राक्षस देवी–देवता होता है!
जिज्ञासु – कहते – मैं माँ आया, बाप आया .....
बाबा – फिर कहोगे राक्षस देवी–देवता होता है, फिर कहोगे – भैंसा देवी–देवता होता है, फिर परसों कहोगे – हाथी देवी–देवता होता है। ये क्या बात हुई? कीड़ा–मकोड़ा देवी–देवता होता है। ये कोई भाषा है?
जिज्ञासु – राक्षस जैसे काम करते हैं।
बाबा– अरे! राक्षसों जैसा काम करेंगे, राक्षसों का काम है दुःख देना और देवताओं का काम है सुख देना।
Student: Baba, it means that the demons are deities as well.
Baba: Is the demon a deity?
Student: They say – Mother has come (in me), Father has come (in me).....
Baba: Then you will say, the demon is a deity, then you will say buffalo is a deity, then the day after tomorrow you will say, an elephant is a deity. What is this? The insects and the worms are deties. Is this a language?
Student: They act like demons.
Baba: Arey, if they act like demons; the job of demons is to give sorrow and the job of deities is to give happiness.

जिज्ञासु – तैंतीस करोड़ तो कलियुग लास्ट तक आते हैं।
बाबा– हाँ जी। देवी–देवता सनातन धर्म नष्ट नहीं होता है। कलियुग अंत तक देवी–देवता सनातन धर्म की आत्माएँ आती रहती हैं।
जिज्ञासु – बाबा, इसका मतलब 16108 आत्मा बहुत पावरफुल हैं।
बाबा– जो राजपरिवार में आने वाले हैं, वो राजयोग सीखने वाले नहीं हैं क्या? जो राजयोग सीखने वाले होंगे, वो पावरफुल आत्माएँ नहीं होंगी?
Student: 33 crores (deities) come till the end of the Iron Age.
Baba: Yes. The Ancient Deity Religion does not perish. The souls belonging to the Ancient Deity Religion keep coming till the end of the Iron Age.
Student: Baba, it means that 16108 souls are very powerful.
Baba: Do those who come in the royal family not learn rajyog? Will those who learn rajyog not be powerful souls?

जिज्ञासु – एक मुरली में सुना था – जो साढ़े चार लाख से भी 16108 जो अच्छे से पढाई करेंगे माना पंक्चुअली क्लास करेंगे, वो बहुत अच्छा पद पाने वाले हैं।
बाबा– 16000 में अच्छा पद पाने वाले भी हैं और फिर दास–दासियों का पद पाने वाले भी हैं। सरेन्डर होना कोई बड़ी बात नहीं होती है लेकिन सरेन्डर होने के बाद निभाना – ये बड़ी बात होती है।
जिज्ञासु – इसलिए हमको तैंतीस करोड़ का नाम नहीं पता होता है।

बाबा– तैंतीस करोड़ का जिसने लक्ष्य रखा होगा, वो तैंतीस करोड़ की बात करे। लक्ष्य रखा होगा 100 में आने का, तो 100 में मनन–चिंतन–मंथन चलेगा कि 100 मणकों में हमारा मणका कौन–सा है? लक्ष्य रखा होगा 8 में आने का, तो 8 का ही मनन–चिंतन–मंथन चलेगा। अव्वल नंबर का लक्ष्य रखा होगा तो अव्वल नंबर का मंथन चलेगा।
Student: I had heard in a Murli that the 16108 souls, who study well, i.e. attend the classes punctually achieve a very good post as compared to the four fifty thousands.
Baba: 16000 include those who achieve good post as well as those who achieve the post of servants and maids. Becoming 'surrendered' is not a big issue, but maintaining (the relationship with the Father) even after becoming 'surrendered' is a big issue.
Student: That is why we don't know the names of 33 crores.
Baba: The one who has aimed to be included among 33 crores will talk about the 33 crores. If someone is aiming to be included among 100, then he will think and churn about 100 as to which bead he is among the 100? If one has aimed to come in the rosary of 8, then he will think and churn only about eight. If someone has aimed to become number one, then he will think and churn about only number one.

जिज्ञासु – बाबा, अष्टविनायक गणेश जो होते हैं, वो अष्टदेव ही होते हैं ना?
बाबा– राम–कृष्ण की आत्माओं के लिए ही बोला है कि द्वापरयुग में जब अंत होता है, तो वही आत्माएँ हनुमान और गणेश का रूप धारण कर लेती हैं।
जिज्ञासु – आठ गणेश को जो दिखाते हैं ना नंबरवार .....
बाबा– जो अष्ट देव हैं, वही वास्तव में अष्ट विनायक बन जाते हैं।
जिज्ञासु – दुनियाँ में जो इतने सारे देवी–देवताओं की पूजा होती है जैसे,..... लक्ष्मी–नारायण, दुर्गा, सरस्वती, कार्तिक, गणेश – ये नं वन जो बनते हैं, उनकी ही पूजा होती है या नम्बर वार सब देवी–देवताओं की पूजा होती है?
बाबा – नम्बरवार ही होते हैं।
Student: Baba, are the eight Vinayak Ganeshas themselves the eight deities?
Baba: It has been said for the souls of Ram and Krishna that when the Copper Age ends, the same souls assume the form of Hanuman and Ganesh.
Student: The eight Ganeshas who are shown numberwise.....
Baba: Actually the eight deities themselves become the eight Vinayaks.
Student: So many deities, who are woshipped in the world, like.....Lakshmi-Narayan, Durga, Saraswati, Kartik, and Ganesh, are those who become number one worshipped or are all the numberwise deities worshipped?
Baba: They are numberwise.

जिज्ञासु – बाबा, माता लोग बिन्दी लगाते हैं और हाथ में कंगन जो पहनते हैं। तो वो ज़रूरी है क्या?
बाबा– जिसकी बुद्वि में बैठ गया कि आत्मिक स्थिति का टीका लगाना ही असली बात है और आत्मा की बिन्दी धारण करना ही असली बात है, वो नकली को क्यों धारण करेगा? अगर धारण करता है तो या तो लोकलाज के वशीभूत है, लोकलाज के बन्धन में बान्धा हुआ है और जो लोकलाज के बन्धन में बान्धा हुआ है वो ईश्वरीय बन्धन में बान्धा हुआ नहीं है। ज्ञान का मतलब ही है भक्ति उड़ जाए। और ये भी बोल दिया भक्ति की कोई भी निशानी रह जावेगी तो अंत में शरीर छोड़ना पड़ेगा।
Student: Baba, mothers apply *bindi* (on their forehead) and wear *kangan* (bangles) in their hands. Is it necessary?
Baba: The one in whose intellect it has fitted that applying the *teeka* (vermilion mark) of soul conscious stage is the actual thing and applying the *bindi* (the dot) of soul is the reality, why will she apply the false one? If she applies, then she is either under the compulsion of public honour or bound in the bondage of public honour and the one who is bound by public honour is not

bound by Godly bondage. (To have) knowledge means that the bhakti should vanish. And it was also said that even if any indication of bhakti remains then one will have to leave the body in the end.

जिज्ञासु – फिर तो सारा समाज विरोधी बनेगा।
बाबा– जो समाज भस्म होने वाला है, उसकी चिन्ता करनी है या जो नया समाज सामने आने वाला है, उसकी चिन्ता करनी है?
जिज्ञासु – जो नया समाज सामने आने वाला है, उसकी चिन्ता करनी है।
बाबा – फिर?
जिज्ञासु– हमारे माता–कन्याएँ ऐसे ही सोचते हैं, माता लोग ऐसे ही सोचते हैं कि – अरे! सिंदूर नहीं लगाएँगे तो ...
बाबा– वो तुम्हारा माता, कन्याएँ होगा। शिवबाबा का तो माता, कन्याएँ नहीं हैं।
Student: Then the entire society will turn against.
Baba: Should we worry about the society that is going to burn into ashes or do we have to worry about the new society that is going to arrive?
Student: We have to worry about the new society that is going to arrive.
Baba: Then?
Student: Our mothers and virgins think like this; mothers think that if they do not apply *sindoor* then.....
Baba: They must be your mothers, virgins. Shivbaba does not have the mothers and the virgins.

समय – 57.58
जिज्ञासु – सर्व सम्बन्धों में तो माता–कन्या हो जाएगा।
बाबा – सम्बन्ध साकार में होता है या सिर्फ निराकार में होता है? सं माना सम्पूर्ण और सं माना समान।
जिज्ञासु – समान बंधन।
बाबा – हाँ जी। दोनों साकार में होंगे तभी सम्बन्ध बनेगा। एक निराकार हो और एक साकार हो, सम्बन्ध बन ही नहीं सकता।
Time: 57.58
Student: The relationship of the Mother and the virgin is included among all the relationships (with the Father).
Baba: Are relationships formed in corporeal form or in just incorporeal form? *Sam* means *sampoorna* (complete) and *sam* means *samaan* (equal).
Student: *Samaan bandhan* (equal relationship/bond).
Baba: Yes. The relationship is possible only when both are in corporeal form. If one is incorporeal and if one is corporeal, the relationship cannot be established at all.

समय – 58.38
जिज्ञासु – बाबा, प्रजापिता का आदि में लौकिक लड़का–लड़की था क्या?
बाबा – प्रजापिता का क्या था, क्या नहीं था, वो तो हिस्ट्री में जब खोज की जायेगी, तभी पता चलेगा। बाबा एक–एक का पार्ट बतावेगा बैठके? बाबा को जितना बताना है उतना मुरली में बता दिया, क्लारिफिकशन में बता दिया।
Time: 58.38
Student: Baba, did Prajapita have a lokik son or daughter in the beginning?
Baba: What did Prajapita have and what he did not have will be known only when the research of the history is undertaken. Will Baba sit and tell the part of each one? Whatever Baba had to tell, he has told in the Murli, in the clarification.

समय – 59.15
जिज्ञासु – 76 में 100 साल पूरे हुए तो प्रजापिता की बीजरूप स्थिति आ गई, लेकिन ब्रह्मा के भी 100 साल पूरे हुए, तो बाबा को क्यों पता नहीं चलता?
बाबा – किसको पता नहीं चलता?
जिज्ञासु – ब्रह्मा बाबा को।
बाबा– ब्रह्मा बाबा को पता क्यों नहीं चलता है? बीजरूप स्टेज बनती है जब रामवाली आत्मा के संसर्ग–संपर्क में है तो बीजरूप स्टेज बनती है।
Time: 59.15
Student: When Prajapita completed 100 years age in 1976 he attained the seed-form stage, but when Brahma also completed 100 years age, then why doesn't Baba come to know of it?
Baba: Who does not come to know of it?
Student: Brahma Baba.
Baba: Why doesn't Brahma Baba come to know of it? When he remains in the company of the soul of Ram he attains the seed-form stage.

जिज्ञासु – बाबा मुरली में जो बोला है – 100 साल पूरे होते हैं तो उसकी अमरलोक की यात्रा शुरू हो जाती है। तो ब्रह्मा बाबा की अमरलोक की यात्रा शुरू नहीं हुई?
बाबा – नहीं हुआ तो एक साल आना बंद क्यों कर दिया? उसे क्या दिखाई पड़ा जो वहाँ मोह से बंधन टूट गया?
जिज्ञासु – लेकिन अभी भी तो जा रहे हैं।
बाबा– जा रहा है इसलिए कि जैसे कोई बच्चा होता है, जन्म लेने के बाद भी हँसता है, खेलता है। उसको कोई हँसाता, खिलाता थोड़े ही है। फिर भी वो पूर्व जन्म की स्मृति में चला जाता है। ऐसे ये कृष्ण बच्चा भी है।
Student: Baba, it has been said in the Murli that when 100 years (of Brahma) are completed, then his journey of the abode of immortality (*amarlok*) begins. So, hasn't Brahma Baba commenced his journey of the abode of immortality?
Baba: If it hadn't begun, then why did he stop coming (in the body of Gulzar Dadi) for one year? What did he see that his bondage attachment for that place ended?
Student: But he is still going.
Baba: He is going because just as there is a child, even after he takes birth he smiles, plays. Nobody makes him smile or play. Even then he recollects the thoughts of the past birth. This child Krishna is also like that.

जिज्ञासु – बाबा, बोला है कि छोटी मम्मी को सर्च लाइट देते हैं। आवाहन करना माना सर्च लाइट देना, छोटी मम्मी को। आवाहन करना। एक वार्तालाप में सुना – उसको सर्च लाइट देना। आवाहन करना माना सर्च लाइट देना .....
बाबा – सर्च लाइट देना है – "दे दान तो छूटे ग्रहण"। वो सर्च लाइट देने की बात है। वो दान किसको देना है? सूर्य को देना है या चन्द्रमा को देना है? वो तो चन्द्रमा को दान देने वाली बात है। बाकी आवाहन करना एक अलग बात है। दान उसको दिया जाता है जो कमजोर होता है और आवाहन कमजोर का किया जाता है या पावरफुल का किया जाता है? पावरफुल का आवाहन किया जाता है। प्योरिटी की पावर में जो जन्म–जन्मान्तर का पावरफुल है, उसका आवाहन करना है और जो माताओं में सबसे बड़ी माता है, आख़री जन्म में कमजोर हो गई है, उसको सर्च लाइट का दान देना है।
किसी ने कहा – जगदम्बा।

Student: Baba, it has been said that search light is given to the junior mother. Summoning means giving searchlight to the junior mother. Summoning (her). I have heard in a discussion (CD) that we should give her searchlight. Summoning (her) means giving search light.....
Baba: Search light is to be given. '*Dey daan toh chootey grahan*' (if someone gives donations, he can overcome the bad influence lunar eclipse). It is a matter of giving searchlight. Who should be given that donation? Is it supposed to be given to the Sun or to the Moon? It is a matter of giving donations to the Moon. As regards summoning, it is a different matter. Donation is given to a person who is weak; and is a weak one summoned or a powerful one summoned? A powerful one is summoned. We have to summon the one who is powerful in the power of purity since many births and the donation of searchlight is to be given to the seniormost mother among all the mothers, who has become weak in the last birth.

जिज्ञासु – आवाहन करना माना क्या? कैसे आवाहन करना है? किस प्रकार से?
बाबा– गुलजार दादी में ब्रह्मा बाबा को कैसे अवाहन कर लेते हैं?
जिज्ञासु – मालूम नहीं।
बाबा– मालूम नहीं? क्यों? बी.के नहीं बने?
जिज्ञासु – नहीं।
बाबा – डाइरैक्ट आ गये?
जिज्ञासु – डाइरैक्ट आ गये।
बाबा – पिछले जन्म में बने होंगे। कोई भी आत्मा को, जैसे कि ब्राह्मणों में आत्मा बुलाई जाती थी, तो आवाहन करते थे कि नहीं करते थे?
जिज्ञासु – वो सिर्फ आवाहन करते थे।
बाबा – हाँ, तो ऐसे ही यहाँ भी आवाहन करना है।
Student: What is meant by 'summoning'? How should we summon? In which manner?
Baba: How do they summon Brahma Baba in the body of Dadi Gulzar?
Student: I don't know.
Baba: Don't you know? Why? Did you not become a BK (earlier)?
Student: No.
Baba: Did you come directly?
Student: I came directly.
Baba: You might have become (a BK) in the past birth. Whichever soul it may be; for example souls used to be recalled in the (bodies of the worldly) Brahmins; so, did they used to summon or not?
Student: They used to just summon.
Baba: Yes, so similarly, we have to summon here as well.

समय – 01:02:18
जिज्ञासु – बाबा, सैकड़ों का मतलब क्या है?
बाबा– सैकड़ों। जैसे हज़ारों। हजारों का मतलब है एक के ऊपर तीन बिन्दी तो एक हज़ार। दो के ऊपर तीन बिन्दी तो दो हज़ार। ऐसे ही सैकड़ों, सैकड़ों का मतलब 9 के ऊपर दो बिन्दी तो सैकड़ों हो गया। 9 सैकड़ा।
Time: 01.02.18
Student: Baba, what does '*sainkaron*' mean?
Baba: *Saikaron*. Like thousands. 'Thousands' means that - if you add three zeroes after one, then it becomes one thousand. If you add three zeroes to two, it becomes two thousand. Similarly, *sainkaron* means if you add two zeroes to 9, it becomes *sainkaron*. 9 *sainkra* (9 thousands).

समय – 01:03:10
जिज्ञासु – बाबा, 76 में कुमारों का चार ग्रुप जिन्होंने बाप को सहयोग दिया , वो फेल हो गया। तीन अनिश्चय हो गया, फेल हो गया; लेकिन बाबा ये चार कुमार जो बताते हैं तो उसमें से एक तो हुआ सनत कुमार। वो तो राम, वो तो फेल नहीं हुआ। इसलिए बाबा ने बोला – लास्ट में, आदि में जैसे कुमार लोग धोखा दिए वैसे अंत में भी धोखा देंगे। लेकिन जो राम के ग्रुप में होगा, वो तो धोखा नहीं देंगे।
Time: 01.03.10
Student: Baba, the group of four kumars who helped the Father in 1976 failed. Three of them lost faith, failed, but Baba, among these four kumars which are mentioned, one is Sanat Kumar. He is (the soul of) Ram, he did not fail. That is why Baba has said – In the last, just as Kumars duped (Baba) in the beginning; similarly, they will dupe even in the end. But the one who is in Ram's group would not dupe.

बाबा– किसको धोखा देगा?
जिज्ञासु – आदि में बाप को धोखा दिया ना, 76 में।
बाबा– उस समय पूरा ज्ञान नहीं था इसलिए धोखा हो गया। और अभी तो राम की आत्मा को पूरा ज्ञान है या अधूरा ज्ञान है?
जिज्ञासु – 76 में राम तो अनिश्चय नहीं हुआ ना, लेकिन वो तीन कुमार अनिश्चय हो गए।
बाबा – जो अमरनाथ का पार्ट है, वो मरने वाला पार्ट होगा या अमरनाथ का पार्ट होगा?
जिज्ञासु– अमरनाथ।
बाबा– तो फिर अनिश्चय कहाँ से आ जायेगा?
जिज्ञासु – नहीं, नहीं। आपने बोला है – जो आदि सो अंत।
Baba: Whom will he dupe?
Student: He duped the Father in the beginning, in 1976, did he not?
Baba: At that time there wasn't complete knowledge; that is why he got duped. And now, does the soul of Ram have complete knowledge or incomplete knowledge?
Student: Ram did not lose faith in 1976, but those three Kumars lost faith.
Baba: Will the part of Amarnath (Lord of immortality) be a part of someone who dies or will it be a part of Amarnath?
Student: Amarnath.
Baba: So, then how will he lose faith?
Student: No, no. You said – "*adi so ant*" -whatever happens in the beginning happens in the end.

बाबा– आदि सो अंत का मतलब क्या हुआ?
जिज्ञासु – आदि 76 में जो सहयोग दिया.....
बाबा – 76 में जो सहयोग दिया, जिन आत्माओं ने और थोड़े समय सहयोग दे करके फिर उल्टे हो गये, तो ऐसे ही अंत में भी फिर सहयोगी बनेंगे, वो ही आत्माएँ। और सहयोगी बन करके फिर विरोधी बन जायेंगे।
जिज्ञासु – फिर विरोधी बन जायेंगे?
बाबा – नहीं तो दुनियाँ का विनाश कैसे होगा?
जिज्ञासु – 2018 के बाद?
बाबा – जब स्थापना होगी तब विनाश भी होगा। जितना–जितना स्थापना होती जावेगी, उतना–उतना विनाश होता जावेगा। टोटल स्थापना हो जावेगी तो टोटल विनाश भी हो जावेगा।

Baba: What does 'as the beginning, so the end' mean?
Student: Those who helped in the beginning, i.e. in 1976....
Baba: Those who helped in 1976, the souls who helped for a short period and then became opponents, so similarly they, the same souls will become helpers in the end. And after becoming helpers they would become opponents once again.
Student: Will they become opponents once again?
Baba: Otherwise, how will the world become destroyed?
Student: After 2018?
Baba: When establishment takes place, then destruction will also take place. The more establishment takes place, the more destruction will take place. When the total establishment takes place, then the total destruction will also take place.

जिज्ञासु – 2018 में विनाश शुरू हो जायेगा?
बाबा – स्थूल में स्थापना हो जायेगी तो स्थूल में विनाश नहीं होगा? होगा या नहीं होगा?
जिज्ञासु – होगा।
बाबा – होगा।
Student: Will destruction begin in 2018?
Baba: When the physical establishment takes place, then will physical destruction not take place? Will it happen or not?
Student: It will take place.
Baba: It will take place.

समय – 01.10.58
जिज्ञासु – बाबा, गोपाल कन्हैया कहा जाता है। अभी जो नई दुनियाँ में पालना ले रहे हैं वो सब माता–कन्याएँ ही हैं।
बाबा – माना भाई लोग नहीं हैं?
जिज्ञासु – गोपाल कन्हैया कहा जाता है। तो भाई लोग कहाँ से आ जाएँगे बाबा?
बाबा – हाँ, तो गऊएँ बनकर रहें ना। बैलपना क्यों बुद्धि में आता है?
जिज्ञासु – लेकिन बाबा, जो बाबा के अलावा एन.एस.में भाई लोग भी रहते हैं.....
बाबा – भाई लोग रहते हैं, तो वो ही भाई लोग रह सकेंगे जिनमें बैलपना न आवे। अगर बैलपना आवेगा तो कंडम।
Time: 01.10.58
Student: Baba, it is said 'Gopal Kanhaiyya'. Well, those who are obtaining sustenance in the new world are all mothers and virgins only.
Baba: Does it mean that brothers are not included?
Student: It is said 'Gopal Kanhaiyya'. So, how would brothers be included Baba?
Baba: Yes, so, they should remain as cows, should they not? Why does bull-ness enter the intellect?
Student: But Baba, apart from Baba, the brothers who are living in NS....
Baba: Brothers reside (in NS); so only those brothers would be able to reside who do not have the nature of a bull. If the nature of a bull enters in them, then they become condemned.

जिज्ञासु – बाबा, गोप–गोपी कहते हैं ना। गोप माना हम भाई हैं ना?
बाबा – हाँ।
जिज्ञासु – गोपी माना माता–कन्याएँ?
बाबा – ठीक है।
जिज्ञासु – गोपों को भी भगाया तो गोपियों को भी भगाया।

Student: Baba, it is said – *Gop-Gopi*, isn't it? *Gop* means we brothers, isn't it?
Baba: Yes.
Student: Does *gopi* means mothers and virgins?
Baba: It is ok.
Student: He made the *gop* as well as the *gopis* to run away/elope (with him).

बाबा – गोपों को भगाया? वो तो ज्ञान के पीछे भागे। गोपों को भागने की क्या दरकार? घर–गृहस्थ में रहकर के पुरुषार्थ नहीं कर सकते? गोपियों को तो भागने की इसलिए दरकार है कि आज कि दुनियाँ में स्त्री जाति को संरक्षण नहीं मिलता। स्त्री जाति जो है, वो असुरक्षित है हर जगह। सारी दुनियाँ में जितने भी पुरुष मात्र हैं, सब दुर्योधन–दुःशासन हैं। इसलिए स्त्री जाति असुरक्षित है। तो उनको तो भागने की दरकार है। बाकी बैलों को भागने की क्या दरकार?
Baba: Did he make the *Gopes* to run away/ elope? They ran after the knowledge. What is the need to make the gopes to run away/elope? Can't they make efforts while living in a household? There is a need to make the *gopis* to run away because in today's world women do not get protection. Women are vulnerable everywhere. All the men in the entire world are Duryodhans and Dushasans. That is why women are vulnerable. So, there is a need to make them run away. But where is the need to make the bulls to run away?

जिज्ञासु – बाबा, ये भगाना जो है .....।
बाबा – वो बुद्धि से भागे।
जिज्ञासु – मन–बुद्धि से भागते हैं।
बाबा – हाँ जी।
Student: Baba, making someone run away...
Baba: They ran through their intellect.
Student: They run through the mind and intellect.
Baba: Yes.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.